प्रकाशनार्थ :

आगम–स्वाध्याय की महिमा

– कविरत्न **डॉ. दिलीप धींग**

(निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

संसार में बहुत सारी चीज़ों का अपरम्पार ज्ञान उपलब्ध है। ज्ञान की अनेक शाखाएँ और उप–शाखाएँ हैं। अगणित विद्याएँ और कलाएँ हैं। इन सबमें मनुष्य जीवन के लिए आत्मज्ञान, आत्मविद्या और धर्मकला की विशेष महत्ता है। ऐसा इसलिए है कि आत्मविद्या सिर्फ इस जीवन तक सीमित नहीं है। आत्मविद्या अनन्त जीवन तक विस्तृत है। आत्मविद्या स्व और पर, सबके लिए सदैव हितकारी है। आत्मविद्या से अन्य विद्याओं को नया अर्थ मिलता है। आत्मविद्या अनन्त जीवन को परिमित करती है तथा इस जीवन को अपरिमित आयाम देती है। जैन आगम आत्मविद्या का सर्वोत्तम साहित्य है।

आगम–साहित्य मूलतः आत्मा से जुड़ा हुआ है। इसलिए यह आस्था से भी जुड़ा है। अनगिनत श्रद्धालुओं और साधकों ने आगमों का स्वाध्याय करके अपने जीवन में नई दिशा, नई ऊर्जा और नई रोशनी पाई है। विभिन्न आगमों पर मनीषियों और साधकों ने काफी विचार–विमर्श किया, लिखा और बोला है। कहीं–कहीं उनकी व्याख्याओं और कथन शैलियों में अन्तर भी है। इस अन्तर को जैन दर्शन की नय दृष्टि तथा आगमों की बहुआयामिता कहा जा सकता है। व्याख्या–भेद और शैली–भेद के बावजूद आत्मशुद्धि और वीतरागता का सन्देश सर्वत्र व्याप्त है।

आगमों के स्वाध्याय में राग–त्याग की प्रबल प्रेरणा मिलती है। आचार्य हेमचन्द्र ने राग के तीन प्रकार बताये हैं – स्नेह राग, विषय राग और दृष्टि राग। स्नेह राग वह है जो अपनों, अपने परिजनों, रिश्तेदारों आदि के प्रति होता है। इन्द्रिय विषयों और विभिन्न कामनाओं के प्रति राग को विषय राग कहा जाता है। दृष्टि राग वह है, जो परम्परा, गुरु, पंथ और दृष्टि के प्रति होता है। स्नेह राग और विषय राग छोड़कर अनेक व्यक्ति संयम का मार्ग अपना लेते हैं और सन्त–महात्मा, पण्डित या उपदेशक बन जाते हैं। लेकिन, दृष्टि राग छोड़ना अनेक महात्माओं के लिए भी कठिनतर होता है। स्नेह राग और विषय राग से उत्पन्न परेशानियाँ वैयक्तिक जीवन में खलबली मचाती है। दृष्टि राग से उत्पन्न स्थिति सामुदायिक और संघीय जीवन में सौहार्द घटाती है। दृष्टि राग घटने से सत्य का मार्ग अधिक आसान हो जाता है तथा सत्य का अनुसंधान व्यापक, बहुपक्षीय व समृद्ध बनता है। वस्तुतः वीतरागता की साधना और लक्ष्य के लिए सभी प्रकार के राग का त्याग अनिवार्य बताया गया है।

राग–त्याग से आध्यात्मिक साधना उच्चतर और अनुत्तर बनती है। अध्यात्म की साधना हमें भेद से अभेद की ओर ले जाती है। जैन दर्शन का एक महत्वपूर्ण सन्देश है – भेद से अभेद की ओर बढ़ना। यह सन्देश अपने सिद्धान्त और व्यवहार, दोनों ही रूपों में अपनाने से लाभ ही लाभ है। यह सन्देश आगम–स्वाध्याय की निष्पत्ति भी है। व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा जाए तो पता चलेगा कि आगम हमारे जीवन के शास्त्र हैं। ये

हमें कदम–कदम पर समाधान देते हैं और निरापद राह सुझाते हैं। अतः आगमों का स्वाध्याय हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, संघीय और आध्यात्मिक जीवन को अधिक सुलझा हुआ, नीतिमय, मैत्रीपूर्ण तथा सजग बनाने में सक्षम है। यह समझ और सजगता इस जीवन को सुखमय बनाती है और परम ध्येय मोक्ष की साधना में सहायक बनती है।

जैन दर्शन की अनेकान्तमय सम्यक् दृष्टि एवं किसी एक शास्त्र का व्यापक अर्थ समझने के लिए अन्य आगमों का स्वाध्याय भी मार्गदर्शक बनता है। यह गौरवशाली तथ्य है कि जैन परम्परा के पास एक से बढ़कर एक, अनेक आगम–शास्त्र हैं। यह पूर्वाचार्यों और विद्वानों की सतत व व्यापक ज्ञान–साधना का उत्तम प्रमाण है। विभिन्न आगमों के स्वाध्याय से आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान, दर्शन, ध्यान, योग, जीव, जगत, व्यवहार आदि बहुत सारे विषयों के सामान्य और विशेष अर्थ–भावार्थ जानने–समझने को मिलते हैं। सतत स्वाध्याय साधक की ज्ञान–पिपासा को शान्त करने की बजाय, उसे जगा देता है और बढ़ा देता है।

वस्तुतः शास्त्र, ज्ञान नहीं है। शास्त्र तो हमारे अप्रकट ज्ञान को प्रकट करने का माध्यम मात्र है। अतः किसी भी शास्त्र के स्वाध्याय के साथ ज्ञान–पिपासा बढ़नी ही चाहिये। स्वाध्याय यानी स्व का अध्ययन इतना सरल नहीं है कि वह पुस्तक बाँचने या गाथाओं को कण्ठस्थ कर लेने मात्र से पूरा हो जाए। ज्ञान–साधना में आगे बढ़ने पर ही साधक को अपनी अल्पज्ञता का पता चलता है। इस संबंध में मेरी ही काव्य–पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ–

अज्ञात के महासमुद्र में बस एक बिन्दु ज्ञात है।
सत्य के सन्धान की सबसे बड़ी यह बात है।
सच्चाई है कि हम अभी अत्यन्त ही अल्पज्ञ हैं।
अज्ञान के कारण ही खुद को मान बैठे विज्ञ हैं।।

सम्यग्ज्ञान की साधना का पुरुषार्थ साधक को अनासक्ति और आत्मध्यान की ओर ले जाने में सहायक बनता है। वैसा आत्मध्यान; आत्मज्ञान का स्पर्श कराता है, आत्मानुभव कराता है। उस स्थिति में साधक को अपने स्वरूप का भान व ज्ञान होता है। साधक को लगता है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है। आत्मा अविनाशी है और देह विनाशी है। आत्मा चैतन्य स्वरूप और अनन्त ज्ञान–दर्शन सम्पन्न है। अस्तित्वगत शाश्वत सत्य की गहन अनुभूति और उपलब्धि आगमों का सार है।

7, अय्या मुदली स्ट्रीट,
साहुकारपेट, चेन्नई–600001